मंडे पॉजिटिव

आशा बॉट मॉडल से जुड़ी उदयपुर जिले की 869 आशा वर्कर्स

आशा बहनों के हाथ एआइ की ताकत, उदयपुर में तैयार हुआ मॉडल

अब देशभर की 10 लाख आशा वर्कर्स को जोड़ने का लक्ष्य

पंकज वैष्णव
patrika.com

उदयपुर. दूरदराज इलाकों में स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाने में आशा सहयोगिनियां अहम कड़ी हैं। अब इनके हाथ में एआइ की ताकत दे दी गई है। उदयपुर की 869 आशा वर्कर्स आशा बॉट मॉडल से जुड़कर सेवाएं दे रही हैं।

चाट्सऐप आधारित चैटबॉट को खुशी बेबी नामक संस्था ने माइक्रोसॉफ्ट रिसर्च की मदद से विकसित किया है। आशा बॉट केंद्र सरकार, यूनिसेफ और अन्य संस्थानों के 40 से ज्यादा दस्तावेज पर जानकारी दे रहा है। आशाबॉट नामक चैटबॉट उदयपुर में काम कर रहा है। इसके जरिये 24 हजार से अधिक मैसेज भेजे जा चुके हैं। 869 आशा वर्कर्स को जोड़ा जा चुका है। लक्ष्य है कि इसे देशभर की 10 लाख से अधिक आशा वर्कर्स तक पहुंचाया जाए। यह कार्यकर्ताओं को उन इलाकों में काम करने में मदद कर रहा है, जहां मोबाइल नेटवर्क नहीं रहता। जहां दूरदराज तक चिकित्सक की उपस्थिति नहीं होती, वहीं अन्य चिकित्साकर्मियों की पहुंच नहीं रह पाती है।

ऐसे काम करता है आशाबॉट

- जीपीटी-4 आधारित हिंदी और हिंग्लिश चैटबॉट आशा बॉट के जरिये महिलाओं और परिवारों को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी देते हैं।
- चाट्सऐप आधारित बॉट पर आशा कार्यकर्ता सवाल पूछती हैं। जवाब ग्रामीण स्वास्थ्य चुनौतियों अनुसार मिलते हैं।
- आशाबॉट को केंद्र सरकार, यूनिसेफ आदि संस्थानों के 40 से ज्यादा दस्तावेज पर तैयार किया गया है।
- अगर किसी सवाल का सही जवाब नहीं मिलता है तो सवाल प्रशिक्षित नर्सों तक पहुंच जाते हैं।
- प्रशिक्षित नर्सों से जवाब कुछ घंटों में आशा वर्कर्स को भेज दिया जाता है। आशाबॉट भरोसेमंद जानकारी ही साझा करता है।
- बॉट के जवाब लिखित और वॉइस में भी मिलते हैं, जिन्हें जरूरत पड़ने पर आशा वर्कर मरीजों को सुना सकती है।

इनका कहना है...

आशा वर्कर हमेशा स्वास्थ्य सेवा की सबसे जरूरी कड़ी रही हैं, लेकिन उनके पास हमेशा जरूरी उपकरण नहीं रहे। अब एआइ आधारित सेवाएं उनका काम आसान बनाएंगी, वहीं सटीक जानकारी जरूरतमंदों तक पहुंचाएंगी।

रुचित नागर, संस्थापक, खुशी बेबी संस्था

हमने आशाओं से सीधे बात करके सिस्टम को उनकी जमीनी जरूरतों के अनुसार ढाला है। उन्होंने हमसे संवेदनशील विषय, जैसे- गर्भ निरोधक और घरेलू हिंसा पर भी खुलकर बात की, जिनका जवाब आशाबॉट में मिलेगा।

प्रज्ञा रामजी, शोधकर्ता, माइक्रोसॉफ्ट